समय : 3 घण्टे
पूर्णांक : 80

हिंदी 'अ'
सी.बी.एस.ई.
उत्तरमाला

प्रतिदर्श प्रश्न–पत्र 2

खण्ड 'अ'

1. **[1 × 5 = 5]**

(i) **(घ)** उपरोक्त (ये) सभी बातें **1**

(ii) **(ग)** लक्ष्य का ही अंश हो जाना **1**

(iii) **(ख)** एक शक्तिप्रद अनुशासन का पालन करना **1**

(iv) **(ग)** ज्ञान का अभाव या अज्ञान **1**

(v) **(क)** भारतीय दर्शन **1**

अथवा

(i) **(ग)** जब हमें अपनी सफलता और क्षमता पर पूर्ण विश्वास हो **1**

(ii) **(क)** ये हमारे प्रति दूसरों के विश्वास को खंडित कर देते हैं **1**

(iii) **(घ)** हमारा आत्मविश्वास और आत्मगौरव खंडित होने का भय होता है **1**

(iv) **(ग)** हमें निराशावादी और डरपोक लोगों से दूर रहना चाहिए **1**

(v) **(घ)** संज्ञा उपवाक्य **1**

2. **[1 × 5 = 5]**

(i) **(घ)** अपने सुचरित्र का उदाहरण देकर **1**

(ii) **(ख)** मनुष्य पछताता है, रोता है **1**

(iii) **(ग)** अज्ञानता से मुक्त मनुष्य भी पृथ्वी के लिए उपयोगी हो सकता है **1**

(iv) **(क)** रूपक अलंकार **1**

(v) **(घ)** जीवन की परिभाषा **1**

अथवा

(i) **(ग)** जो अपने गुणों और कार्यों के द्वारा यश अर्जित करते हैं **1**

(ii) **(क)** कुंती तथा सूर्य **1**

(iii) **(ख)** जलधारा पर बहती हुई बंद पेटी **1**

(iv) **(घ)** इन सभी गुणों से युक्त थे। **1**

(v) **(ग)** स्वयं कर्ण ने **1**

3. **[1 × 4 = 4]**

(i) **(ख)** दिनेश खाना खाकर चला गया **1**

(ii) **(घ)** जैसे ही वह आए, तुम छिप जाना **1**

(iii) **(ख)** उसने मुझे देखा और खिसक गया **1**

OSWAAL BOOKS LEARNING MADE SIMPLE

(iv) (घ) क्रिया विशेषण उपवाक्य **1**

(v) (ग) मैं बाज़ार जाऊँगा और फल लाऊँगा। **1**

परीक्षक टिप्पणी एवं 'सुझाव-संकेत'

मूल्यांकन कार्य करते समय यह पाया गया कि विद्यार्थी प्राय: वाक्य भेद और रेखांकित उपवाक्य का भेद पहचानने में गलती कर देते हैं। वे संयुक्त और मिश्र वाक्य का अंतर करने में भ्रमित हो जाते हैं। वे वाक्य रूपांतरण करते समय और प्रधान तथा आश्रित उपवाक्य की पहचान करते समय भी गलतियाँ करते हैं। कुछ विद्यार्थी वर्तनीगत त्रुटियाँ भी करते हैं। अत: वाक्य संबंधी प्रश्न हल करते समय ध्यान रखें कि—

1. संयुक्त वाक्य में दो या दो से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य किसी योजक (समानाधिकरण) से जुड़े होते हैं। ये सभी स्वतंत्र उपवाक्य अपने पूर्ण अर्थ का बोध कराने में समर्थ होते हैं। जबकि मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य होता है और एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं जो व्यधिकरण योजक द्वारा जुड़े होते हैं।
2. प्रधान और आश्रित उपवाक्य की पहचान के लिए दिए गए मिश्र वाक्य को सरल वाक्य में बदलें और देखें कि जो क्रिया बदल जाती है वह आश्रित उपवाक्य और जो क्रिया सरल वाक्य बनाने पर भी नहीं बदलती वह प्रधान उपवाक्य होगा।
3. व्याकरण कार्य का निरंतर लिखित अभ्यास कीजिए, इससे विषय की समझ बढ़ेगी और वर्तनी दोष दूर होगा।

4. **[1 × 4 = 4]**

(i) (ख) लड़की से रात भर सोया न जा सका **1**

(ii) (क) वह खाना खाती है **1**

(iii) (ख) अध्यापिका द्वारा बच्चों को कहानी सुनाई जाती है **1**

(iv) (ग) भाववाच्य **1**

(v) (ख) वृद्ध से चला नहीं जाता **1**

5. **[1 × 4 = 4]**

(i) (ख) अव्यय, रीतिवाचकक्रियाविशेषण, 'चलना' क्रिया की विशेषता का सूचक **1**

(ii) (क) विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, विशेष्य-मजदूर **1**

(iii) (घ) क्रिया, अकर्मक, एकवचन, पुल्लिंग, भूतकाल, कर्तृवाच्य **1**

(iv) (ख) संज्ञा, व्यक्तिवाचक, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक, 'जा रहा है' क्रिया का कर्ता **1**

(v) (घ) अव्यय, विस्मयादिबोधक, हर्ष सूचक **1**

6. **[1 × 4 = 4]**

(i) (ख) निर्वेद **1**

(ii) (ग) रौद्र रस **1**

(iii) (क) आलंबन और उद्दीपन **1**

(iv) (ख) अद्भुत रस **1**

(v) (क) नौ **1**

7. **[1 × 5 = 5]**

(i) (ख) उदास शांत संगीत को सुनने जैसा **1**

(ii) (ग) एक साहित्यिक संस्था (समूह) **1**

(iii) (क) वे उन पर बेबाक राय और सुझाव देते थे **1**

(iv) (घ) अपना बच्चा और फ़ाद का उसके मुख में पहली बार अन्न डालना **1**

(v) (ख) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना **1**

8. **[1 × 2 = 2]**

(i) (ख) एक दिव्यांग (विकलांग) चश्मेवाला **1**

(ii) **(घ)** पतनशील सामंती वर्ग की बनावटी जीवन शैली पर **1**

9. **[1 × 5 = 5]**

(i) **(ख)** अपनी बेटी का कन्यादान कर उसे पर पक्ष के हाथ सौंपने का **1**

(ii) **(घ)** उपरोक्त सभी कारणों से **1**

(iii) **(क)** भोली और सरल **1**

(iv) **(ख)** लड़की को सामाजिक कठिनाइयों और व्यवहार की जानकारी नहीं थी **1**

(v) **(ग)** ऋतुराज **1**

10. **[1 × 2 = 2]**

(i) **(ग)** श्रीराम ने परशुराम से **1**

(ii) **(क)** फागुन का **1**

खण्ड 'ब'

11. **[2 × 4 = 8]**

(i) बच्चों द्वारा नेताजी की चश्मा रहित मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा लगाना हमारे मन में एक आशा की किरण जगाता है। नेताजी की चश्मा रहित मूर्ति बच्चों को भी अच्छी नहीं लगती इसीलिए कैप्टन की मृत्यु के पश्चात इस कमी को पूरा करने के लिए बच्चे उस पर एक सरकंडे का चश्मा बनाकर लगा देते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि बच्चों अर्थात देश की भावी पीढ़ी के मन में भी देश प्रेम और शहीदों के प्रति आदर एवं श्रद्धा की भावना विद्यमान है। निश्चय ही हमारे देश का भविष्य उज्ज्वल है। **2**

(ii) जहाँ लोगों के मन में हर क्षण अपनी मृत्यु का भय बना रहता है, वहीं भगत सदा निश्चिंत और मृत्यु से निर्भय दिखाई देते थे। वह जीवन भर अपने नियम, व्रत, स्नान, संध्या आदि कठोर दिनचर्या का पालन करते रहे। मृत्यु की चिंता ने उन्हें कभी त्रस्त नहीं किया। यहाँ तक कि जीवन के अंतिम दिन भी शाम को उन्होंने कबीर के पद गाए और प्रात: होने पर लोगों ने देखा कि वे इस संसार को छोड़कर जा चुके थे। इस प्रकार उनकी मृत्यु उनके सिद्धांतों के अनुरूप ही हुई। **2**

(iii) लेखक को सेकंड क्लास के डिब्बे में सहसा प्रवेश करते देख नवाब साहब के चेहरे पर असंतोष का भाव छा गया। उन्हें अपने एकांत चिंतन में बाधा का अनुभव होने लगा। वे अनमने से होकर ट्रेन की खिड़की से बाहर झाँकते हुए लेखक ने देखने का नाटकीय प्रदर्शन करते रहे। उनके इन्हीं हाव-भावों से लेखक को महसूस हुआ कि वे उनसे बातचीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं है और फिर उन्होंने भी नवाब साहब से बातचीत करने के लिए कोई उत्साह नहीं दिखाया। **2**

(iv) पाठ में ऐसे कई प्रसंग आए हैं जिनसे फादर बुल्के का हिंदी भाषा के प्रति प्रेम प्रकट होता है। उन्होंने हिंदी में एम.ए. किया एवं शोध प्रबंध रामकथा; उत्पत्ति और विकास लिखा। मातरलिंग के नाटक 'ब्लू बर्ड' का 'नील पंछी' नाम से तथा बाइबिल का हिंदी में अनुवाद किया। वे राँची में हिंदी तथा संस्कृति विभाग के विभागाध्यक्ष रहे। साथ ही उन्होंने 'अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश तैयार किया। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए वे सदैव चिंतित रहते थे तथा उसके समर्थन में प्रत्येक मंच से अकाट्य तर्क प्रस्तुत करते थे। **2**

12. **[2 × 3 = 6]**

(i) गोपियाँ उद्धव पर व्यंग्य करती हुई उन्हें भाग्यवान कहती हैं। वे कहती हैं कि तुम श्रीकृष्ण के अंतरंग मित्र हो परंतु श्री कृष्ण के इतना निकट रहते हुए भी तुम उनके प्रेम से वंचित रहे। जिसे श्रीकृष्ण के इतना निकट रहकर भी उनके प्रति अनुराग नहीं हुआ, वह तुम जैसा ही भाग्यवान हो सकता है। वास्तव में गोपियाँ उद्धव को भाग्यवान कहकर व्यंग्य कर रही हैं कि तुमसे बढ़कर दुर्भाग्य किसका है जो कृष्ण के वास्तविक स्वरूप को नहीं पहचान पाए। **2**

(ii) लक्ष्मण ने वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताएँ बताईं–

(क) वीर योद्धा शत्रु के समक्ष केवल अपनी वीरता का बखान नहीं करते बल्कि रणक्षेत्र में अपना पराक्रम दिखाते हैं।

(ख) वे वीर, साहसी, निडर, शांत, विनम्र तथा धैर्यवान होते हैं।

(ग) वीर योद्धा अपशब्दों का प्रयोग नहीं करते, वे क्षोभ रहित होते हैं। 2

(iii) 'उत्साह' कविता में कवि ने नवजीवन वाले 'विशेषण' का प्रयोग बादलों के लिए किया है। बादल नवसृजन का प्रतीक हैं। बादल बरसकर अपनी शीतल फुहारों से ग्रीष्म ऋतु की तपन से त्रस्त जनमानस को राहत पहुँचाते हैं। वे सूखी हुई वनस्पतियों को फिर से हरा-भरा कर उन्हें नवजीवन प्रदान करते हैं। **2**

13. **[3 × 2 = 6]**

(i) भोलानाथ का अधिकांश समय अपने पिता के साथ ही बीतता था किंतु विपत्ति काल में भोलानाथ माता के आँचल में ही शरण लेता है। माँ का ममत्व बच्चे को संसार के बड़े से बड़े भय से मुक्ति प्रदान कर के सर्वाधिक सुख तथा सुरक्षा प्रदान करता है। अत: अध्याय का शीर्षक विषयानुकूल तथा लेखक की भावना को पूर्णता अभिव्यक्त करने के कारण सार्थक एवं सटीक है। इसका अन्य शीर्षक-'बचपन की मधुर स्मृतियाँ' अथवा 'माता-पिता का सानिध्य' भी हो सकता है। **3**

(ii) मेरे विचार से यह पत्रकारिता का प्रशंसनीय कार्य नहीं है। प्राय: पत्रकारिता में कुछ ऐसे व्यक्तियों के चरित्र को भी महत्व दे दिया जाता है जो चारित्रिक रूप से समाज में प्रशंसनीय नहीं है किंतु अपने असहज कार्यों से चर्चा में आ जाते हैं।

इस प्रकार की व्यर्थ चर्चाएँ युवा पीढ़ी पर भी बुरा प्रभाव डालती हैं। वे उन व्यक्तियों का अनुसरण करते हैं और वैसा ही जीवन जीना चाहते हैं। कई बार उन की इच्छाएँ इतनी बलवती हो जाती हैं कि वे अपने लक्ष्य को भूलकर अनुचित मार्ग अपनाने में भी संकोच नहीं करते हैं या अवसाद ग्रसत हो जाते हैं। **3**

(iii) प्रकृति ने जल संचय की अद्भुत व्यवस्था की है। प्रकृति सर्दियों में बर्फ के रूप में वर्षा के जल का संग्रह कर लेती है। गर्मियों में जब जनमानस पानी के अभाव में त्राहि-त्राहि करने लगता है तो यही बर्फ की शिलाएँ पिघल-पिघल कर कल-कल करती नदियों की जलधारा के रूप में प्राणिमात्र की प्यास बुझाती हैं। इन्हीं नदियों की बहती धाराएँ अन्न उत्पादन में भी सहयोग कर जन-जीवन का पोषण करती हैं। **3**

14. **[5]**

(i) **बढ़ती बेरोजगारी : एक ज्वलंत समस्या** **[5]**

जब कोई व्यक्ति काम करने योग्य एवं इच्छुक हो किंतु उसे कार्य करने के अवसर प्राप्त न हो सकें उस अवस्था को 'बेरोजगारी' कहते हैं। यह आज हमारे देश की प्रमुख समस्या बन गई हैं जो उसकी प्रगति में बाधक है। निरंतर बढ़ती जनसंख्या और उपलब्ध सीमित साधनों ने इस संकट को और भी विषम बना दिया है। शिक्षित बेरोजगार कई बार रोजगार न मिलने पर अवसाद ग्रस्त हो जाते हैं या अपराध करने को विवश हो जाते हैं। ग्रामीण युवक भी पलायन करके शहरी बेरोजगारी को बढ़ावा दे रहे हैं। यद्यपि इस समस्या का समाधान इतना सरल नहीं है किंतु शिक्षा प्रणाली में सुधार करके, व्यवसायीकरण को बढ़ावा देकर, लोगों को उनके पैतृक व्यवसाय से जोड़कर, ग्रामीण क्षेत्रों में कुटीर उद्योग धंधों की स्थापना करके, जनसंख्या पर नियंत्रण तथा ग्रामीणों में कृषि के प्रति अभिरुचि जाग्रत करके इस समस्या का समाधान पाया जा सकता है। हमें ग्रामीण कुटीर उद्योगों को पुन: स्थापित करना होगा और वहाँ की आवश्यकता के अनुसार उद्योग धंधे लगाने की योजना बनानी होगी। **[5]**

(ii) **हमारे राष्ट्रीय पर्व** **[5]**

पर्व या त्योहार हमारे जीवन में उल्लास, उमंग, आनंद तथा सरसता लाने के साथ ही हमें अनेक प्रकार के संदेश भी देते हैं। ऐसे पर्व जिनका संबंध संपूर्ण राष्ट्र से होता है, राष्ट्रीय पर्व कहलाते हैं। गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गांधी जयंती आदि हमारे प्रमुख राष्ट्रीय पर्व हैं। इनके अतिरिक्त शहीद दिवस, शिक्षक दिवस, बाल दिवस आदि भी राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किए जाते हैं। गणतंत्र दिवस (26 जनवरी)' को भारत का संविधान लागू हुआ तथा भारत एक संप्रभुता संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य बना था। 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के रूप में हर्षोल्लास से मनाया जाता है। गांधी जयंती (2 अक्टूबर) पर सब राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि देकर सत्य और अहिंसा को अपनाने का संकल्प लेते हैं। हमारे राष्ट्रीय पर्व हमारी अमूल्य धरोहर हैं। इमें इन पर्वों का महत्व समझते हुए इन्हें पूरी श्रद्धा, एकता और धार्मिक सद्भाव के साथ मनाना चाहिए।

(iii) **मधुर वचन है औषधि** **[5]**

मधुर वाणी अमृत के समान होती है। जगत को शीतल और शांत बनाने के लिए मधुर वचनों से अधिक कुछ भी लाभदायक नहीं है। कहा भी गया है-'मधुर वचन है औषधि कटु वचन है तीर' अर्थात मीठी वाणी औषधि के समान है, वहीं कटु वचन तीर के समान चुभ जाते हैं। वाणी की मधुरता व्यक्ति का भूषण है। मृदुभाषी समाज में आदर एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है तथा सभी का प्रिय हो जाता है। मधुर वचनों के द्वारा कोई भी बिगड़ा हुआ काम बन सकता है। कटु वक्ता सर्वत्र निंदा का पात्र होता है। कटु वचन हमारे अंतर्मन को बेध देते हैं। शस्त्र का घाव भर सकता है पर कटु वचनों का घाव कभी नहीं भरता। मधुर वचनों से व्यक्ति में विनम्रता आती है, जो मानव का प्रमुख गुण है। जिस प्रकार एक पुष्प की सुगंध अपने आसपास के वातावरण को सुवासित करती है उसी प्रकार मधुर वचन बोलने वाला व्यक्ति भी अपने चारों ओर प्रेम और सौहार्द का वातावरण निर्मित करता है। अत: हमें सदैव मधुर वचन बोलने चाहिए। **[5]**

15. **[5]**

सेवा में

अध्यक्ष महोदय

विद्यालय प्रबंध समिति

मानस विद्या मंदिर

साकेत नगर, दिल्ली।

दिनांक 25 फरवरी, 20XX

विषय—चुनौतीपूर्ण विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के संदर्भ में

मान्यवर/महोदय

मैं इस विद्यालय में कक्षा दसवीं ब का छात्र तथा विद्यालय की छात्र परिषद् का सचिव भी हूँ। निवेदन है कि हमारे विद्यालय में ऐसे कई विद्यार्थी पढ़ते हैं, जिनकी इच्छाशक्ति तो प्रबल है किंतु वे शारीरिक रूप से दिव्यांग हैं। वे केवल नियमित रूप से विद्यालय में आते ही नहीं हैं अपितु विद्यालय की प्रत्येक स्पर्धा में भाग भी लेते हैं।

मेरा आपसे निवेदन है कि ऐसे विद्यार्थियों के लिए कुछ विशेष सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ, जिससे उन्हें शिक्षा प्राप्ति में असुविधा न हो। कक्षा-कक्ष में उनके बैठने का विशेष प्रावधान किया जाए तथा प्रयोगशालाओं तक जाने हेतु कुछ व्हील चेयर्स की उपलब्धता भी सुनिश्चित की जाए। उनकी सभी कक्षाएँ भूतल पर ही हों ताकि उन्हें असुविधा का सामना न करना पड़े। मैदान में उनके लिए विशेष प्रकार के झूले तथा आसानी से खेले जाने वाले खेल उपकरणों की व्यवस्था करने की भी कृपा करें, जिससे वे स्वयं को अन्य विद्यार्थियों से अलग समझकर हीन भावना से ग्रस्त न हों।

आशा है आप मेरी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देने की कृपा करेंगे। मै। पूर्ण आशान्वित हूँ कि आप इस विषय पर गंभीरता पूर्वक विचार करके शीघ्र ही विद्यालय में पढ़ रहे दिव्यांग विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान करेंगे।

धन्यवाद

भवदीय

अ ब स

कक्षा 10 ब

मानस विद्या मंदिर

अथवा

273/5, राजीव नगर

आगरा, उत्तर प्रदेश

दिनांक.....

प्रिय मित्र आदित्य

मधुर स्मृति/सप्रेम नमस्कार

आशा है, तुम सपरिवार स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे। आज मुझे तुम्हारे साथ पर्वतीय स्थल 'मसूरी' में बिताए हुए मधुर दिनों की बहुत याद आ रही है। जिस स्नेह से तुमने मुझे वहाँ के दर्शनीय स्थलों की सैर कराई, उसे मैं आजीवन नहीं भूल सकता। तुम्हारे विनम्र व्यवहार, स्नेह और आत्मीयता की छाप मेरे मन पर अंकित हो गई है।

मेरा मसूरी की यात्रा करने आना और तुम से परिचय होना, एक सुखद संयोग ही था। तुम्हारे परिवार से मिलकर भी बहुत अच्छा लगा। तुम्हारे भव्य आतिथ्य और परिवार से प्राप्त स्नेहपूर्ण व्यवहार के लिए हार्दिक धन्यवाद। तुम्हारे जैसा मित्र पाकर मैं स्वयं को बहुत भाग्यशाली समझता हूँ।

मेरे माता-पिताजी भी तुम्हारे विषय में जानकर बहुत प्रसन्न हुए। उनकी इच्छा है कि तुम इस वर्ष ग्रीष्मावकाश में आगरा आओ। यहाँ पर अनेक दर्शनीय स्थल हैं, जिन्हें देखकर तुम्हें प्रसन्नता होगी। अपने माता-पिता को मेरा सादर नमस्कार और अपने छोटे भाई को मरो स्नेह देना।

एक बार पुनः आभार सहित

तुम्हारा मित्र

OSWAAL BOOKS LEARNING MADE SIMPLE

16. **[5]**

शीघ्र आएँ **खुल गया** **खुल गया** **प्रवेश प्रारंभ**

आपके बच्चों के उज्जवल भविष्य एवं सर्वांगीण विकास हेतु

ब्राइट किड्स पब्लिक स्कूल

(नर्सरी से कक्षा पाँच तक)

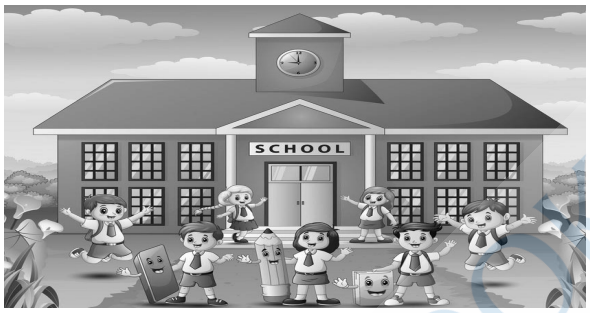

प्रशिक्षित एवं अनुभवी शिक्षक, छात्र आधारित गुणवत्ता युक्त शिक्षण, स्वच्छ हवादार कमरे, प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय, कंम्प्यूटर लैब आदि की सुविधा

पता—घंटाघर चौक के पास, रिंग रोड, मेरठ

संपर्क—9876XXXX

अथवा

वैश्विक महामारी 'कोविड-19' (कोरोना) के प्रसार को रोकना हम सबका उत्तरदायित्व है*

इस घातक बीमारी के संक्रमण से बचाव हेतु अपनाएँ निम्नलिखित उपाय :

- अपने हाथों को बार-बार साबुन और पानी से धोएँ या सैनिटाइज़र का प्रयोग करें।
- अपने मुँह और नाक को ढकने के लिए सदैव मास्क का प्रयोग करें।
- खाँसते या छींकते समय टिशू का इस्तेमाल करें, और फिर उसे तुरंत फेंक दें।
- जहाँ तक संभव हो घर से बाहर न निकलें।
- यात्रा करने से पूर्व यह सुनिश्चित करें कि आप पूर्ण स्वस्थ हों।
- फल, सब्जी आदि को अच्छी तरह धोकर ही प्रयोग करें।

'कोरोना वायरस से सुरक्षा ही बचाव है।'

[5]

17. **[5]**

वधाई संदेश

11 जून, 20XX प्रात: 6 : 00 बजे

अंकुर / महिमा

प्रतियोगी परीक्षा में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त करने पर हार्दिक बधाई स्वीकार करो। मुझे विश्वास था कि तुम अवश्य सफल होगे/होगी.....

कठिन परिश्रम और प्रयास से यह संभव हो पाया है।

जीवन लक्ष्य पा लिया तुमने, पाई चरम सफलता है।

तुम सदैव इसी प्रकार उन्नति के पथ पर अग्रसर रहो। परिवार को बहुत बधाई।

राहुल / सीमा

[5]

अथवा

सांत्वना-संदेश

15.02.20XX प्रात: 6 : 00 बजे

अ ब स

यह शरीर नश्वर है और संसार ईश्वर की इच्छा के अधीन है। प्रभु से प्रार्थना है कि वे दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें तथा शोक-संतप्त परिवार को इस असीम दु:ख को सहने की शक्ति दें। इस दुखद घड़ी में हम सब आपके साथ हैं।

क ख ग

[5]

❑❑

OSWAAL BOOKS LEARNING MADE SIMPLE